# व्यावसायिक हिंदी लेखन – I

**DR. PAVAN MISHRA**
***Jagatpur P.G. College***
*Varanasi, Uttar Pradesh, INDIA*

# व्यावसायिक हिंदी लेखन - I

Copyright© : **Dr. Pavan Mishra**
Publishing Rights℗ : VSRD Academic Publishing
*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*

**ISBN-13: 978-93-48703-21-7**
**FIRST EDITION, OCTOBER 2025, INDIA**

*Printed & Published by:*
**VSRD Academic Publishing**
(*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*)

**Disclaimer:** The author(s) are solely responsible for the contents compiled in this book. The publishers or its staff do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional and readers are requested to communicate such errors to the Author(s) or Editor(s) or Publishers to avoid discrepancies in future.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise, without the prior permission of the Publishers & Author.

*Printed & Bound in India*

## VSRD ACADEMIC PUBLISHING
*A Division of Visual Soft India Pvt. Ltd.*

**REGISTERED OFFICE**
154, Tezab mill Campus, Anwarganj, KANPUR–208003 (UP) (IN)
Mb:9899936803, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

**MARKETING OFFICE**
340, FF, Adarsh Nagar, Oshiwara, Andheri(W), MUMBAI–400053 (MH) (IN)
Mb:9956127040, Web: www.vsrdpublishing.com, Email: vsrdpublishing@gmail.com

# प्राक्कथन (*Preface*)

भारतीय समाज के तेजी से बदलते और डिजिटल होते संचार परिवेश में, **"व्यावसायिक हिंदी लेखन"** की भूमिका दिन-ब-दिन अनिवार्य होती जा रही है। आज, हिंदी केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं रही, बल्कि इसने प्रशासन, पत्रकारिता, विज्ञापन, कॉर्पोरेट संचार और डिजिटल मीडिया जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपनी सक्रिय और सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। आधुनिक युग में प्रभावी संचार केवल एक'सॉफ्ट स्किल' नहीं, बल्कि एक पेशेवर आवश्यकता है। यह पुस्तक इसी आवश्यकता को समझते हुए, छात्रों को हिंदी में प्रभावी व्यावसायिक संचार के लिए तैयार करने का एक प्रयास है।

यह पुस्तक विशेष रूप से **महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी** के स्नातक स्तर पर संचालित **"स्किल डेवलपमेंट"** पाठ्यक्रम के अंतर्गत **'व्यावसायिक हिंदी लेखन - I'** पेपर को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करना है, बल्कि उन्हें एक व्यावहारिक दृष्टिकोण से सक्षम बनाना है। यह केवल एक पाठ्यक्रम की पूर्ति के लिए लिखी गई पुस्तक नहीं है, बल्कि यह हिंदी भाषा के माध्यम से संचार की कला और विज्ञान को समझने, सीखने और उसे वास्तविक व्यावसायिक जीवन में लागू करने पर केंद्रित एक व्यापक और गहन संसाधन है।

पुस्तक की संरचना को इस तरह से तैयार किया गया है कि यह पाठक को एक व्यवस्थित यात्रा पर ले जाए, जो संचार की सबसे मूलभूत अवधारणाओं से लेकर जनसंचार की सबसे आधुनिक विधाओं तक फैली हुई है। इसमें निहित प्रमुख विषयों में **संचार की मूल अवधारणाएँ** (परिभाषा, घटक, मॉडल), **संचार के प्रकार और उद्देश्य** (शैली और पहुँच के आधार पर

वर्गीकरण) और **जनसंचार के माध्यम और विधाएँ** (पारंपरिक जैसे समाचार-पत्र, पत्रिका, रेडियो, टेलीविज़न; और आधुनिक जैसे इंटरनेट, सोशल मीडिया, पत्रकारिता एवं संपादन) शामिल हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसका **व्यवस्थित, सरल और छात्र-केंद्रित प्रस्तुतीकरण** है। प्रत्येक अध्याय को तार्किक रूप से छोटे-छोटे उप-विषयों में विभाजित कर सहज और बोधगम्य भाषा में समझाया गया है। विषय-वस्तु को केवल सिद्धांतों तक सीमित न रखते हुए, इसे **अभ्यास-आधारित अध्ययन** को प्राथमिकता दी गई है। इसमें दिए गए उदाहरण, केस स्टडीज़ और अभ्यास प्रश्न छात्रों को स्वयं लेखन-प्रशिक्षण में भागीदार बनने का अवसर देते हैं, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे कक्षा में सीखे गए सिद्धांतों को वास्तविक दुनिया में लागू करने में सक्षम होते हैं।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक **'व्यावसायिक हिंदी लेखन - I'** के पेपर के लिए एक पूर्ण और अनिवार्य मार्गदर्शिका सिद्ध होगी। यह न केवल छात्रों और शिक्षकों के लिए उपयोगी है, बल्कि शोधार्थियों और प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए भी समान रूप से सहायक होगी। यह पुस्तक हिंदी भाषा को एक शक्तिशाली और बहुमुखी व्यावसायिक उपकरण के रूप में स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, जिससे छात्र अपने भविष्य के पेशेवर जीवन में एक प्रभावी और कुशल संचारक बन सकें।

Pavan mishra

**डॉ. पवन मिश्रा**

# समीक्षा / अनुमोदन

## (*Reviews / Endorsements*)

## (I)

भारतीय समाज के वर्तमान संचार परिदृश्य में, जहाँ हिंदी ने केवल साहित्यिक मंचों तक सीमित न रहकर प्रशासन, पत्रकारिता और डिजिटल मीडिया जैसे क्षेत्रों में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है, वहाँ **"व्यावसायिक हिंदी लेखन - I"** जैसी पुस्तक की आवश्यकता अपरिहार्य हो गई है। मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि**डॉ. पवन मिश्रा** ने इस आवश्यकता को समझते हुए एक ऐसी पुस्तक की रचना की है, जो इस विषय पर एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता इसका **व्यवस्थित और छात्र-केंद्रित प्रस्तुतीकरण** है। लेखक ने संचार की मूलभूत अवधारणाओं से लेकर जनसंचार के आधुनिक माध्यमों और विधाओं तक, हर पहलू को सरल और सहज भाषा में समझाया है। प्रत्येक अध्याय को तार्किक रूप से विभाजित किया गया है, जिससे छात्रों के लिए विषय को आत्मसात करना आसान हो जाता है। यह पुस्तक सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक उदाहरणों, केस स्टडीज़ और अभ्यास प्रश्नों के साथ जोड़कर छात्रों को वास्तविक जीवन की कार्य-परिस्थितियों के लिए तैयार करती है।

डॉ. मिश्रा का गहन शोध और शिक्षा के क्षेत्र में उनका व्यापक अनुभव इस पुस्तक के हर पृष्ठ पर स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने न केवल संचार के सिद्धांतों को समझाया है, बल्कि उन्होंने जनसंचार के माध्यमों और विधाओं (जैसे समाचार, पत्रकारिता, सिनेमा और सोशल मीडिया) के इतिहास, विकास और सामाजिक प्रभाव का भी गहराई से विश्लेषण किया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक **महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी** के स्नातक स्तर के छात्रों के लिए एक अनिवार्य मार्गदर्शिका सिद्ध होगी। यह उन्हें न केवल अपनी परीक्षा में सफल होने में मदद करेगी, बल्कि उन्हें भविष्य के पेशेवर जीवन में एक प्रभावी और कुशल संचारक बनने के लिए भी प्रेरित करेगी। मैं इस महत्वपूर्ण प्रयास के लिए डॉ. पवन मिश्रा की सराहना करता हूँ और इस पुस्तक की सफलता की कामना करता हूँ।

**डॉ. नंदलाल शर्मा**
विभागाध्यक्ष, हिंदी-विभाग
जगतपुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी

**(II)**

"**व्यावसायिक हिंदी लेखन - I**" एक समयोचित और अत्यंत उपयोगी प्रयास है। डॉ. पवन मिश्रा जी ने जिस गहनता और स्पष्टता के साथ संचार के मूलभूत सिद्धांतों और आधुनिक जनसंचार की विधाओं को हिंदी में प्रस्तुत किया है, वह सराहनीय है। यह पुस्तक न केवल महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के पाठ्यक्रम की आवश्यकता को सफलतापूर्वक पूरा करती है, बल्कि यह छात्रों को **स्पष्टता, संक्षिप्तता और औपचारिकता** के साथ हिंदी में पेशेवर संवाद करना सिखाती है।

पुस्तक की सबसे बड़ी शक्ति इसका **व्यावहारिक दृष्टिकोण** है। संचार के प्रकार हों या जनसंचार के माध्यमों का विश्लेषण, हर खंड को केस स्टडीज़ और सरल उदाहरणों से समृद्ध किया गया है। यह पुस्तक आज के छात्रों के लिए एक अनिवार्य मार्गदर्शिका है, जो उन्हें हिंदी को एक प्रभावी **व्यावसायिक उपकरण** बनाने में सशक्त करेगी। मैं इस व्यवस्थित कृति के प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

**डॉ. शीतला प्रसाद सिंह**
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
केशव प्रसाद मिश्र राजकीय महिला महाविद्यालय, औराई, भदोही

डॉ. पवन मिश्रा द्वारा रचित यह पुस्तक **"व्यावसायिक हिंदी लेखन - I"** हिंदी के लिए एक **मूल्यवान** और आवश्यक योगदान है। लेखक ने अपने गहन शोध और विषय के प्रति अपनी अद्भुत पकड़ का परिचय दिया है।

पुस्तक की संरचना अकादमिक रूप से उत्कृष्ट है—यह छात्रों को पहले सिद्धांतों को समझने का एक स्पष्ट मार्ग देती है, और फिर सीधे जनसंचार के उद्देश्यों (सूचना, शिक्षा, मनोरंजन, एजेंडा-सेटिंग) की व्यावहारिकता को समझने का अवसर देती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लेखक ने **पारंपरिक और डिजिटल** दोनों माध्यमों—जैसे समाचार-पत्र, रेडियो, इंटरनेट और सोशल मीडिया—के इतिहास, चुनौतियों और उपयोगिता का विस्तृत चित्रण किया है।

यह पुस्तक केवल एक पाठ्यक्रम पूरा नहीं करती, बल्कि यह छात्रों को **विश्लेषणात्मक और तार्किक संचारक** बनने के लिए प्रशिक्षित करती है, जो आज के बदलते कार्य-जगत की सबसे बड़ी माँग है। मैं सभी छात्रों और हिंदी के क्षेत्र से जुड़े लोगों को इस **सुव्यवस्थित, सारगर्भित और प्रेरणादायक** पुस्तक के अध्ययन की हार्दिक सिफारिश करता हूँ।

**डॉ. प्रद्युम्न कुमार पासवान**
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
डी.सी.एस. खंडेलवाल पी०जी० कॉलेज, मऊ

# आभार (*Acknowledgements*)

इस पुस्तक **"व्यावसायिक हिंदी लेखन - I"** को अंतिम रूप देने की यात्रा में अनेक व्यक्तियों का मार्गदर्शन, प्रेरणा और सहयोग अमूल्य रहा है। मैं उन सभी महानुभावों के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके बिना यह कार्य पूर्ण नहीं हो सकता था।

सबसे पहले, मैं अपने **गुरु समान मार्गदर्शक प्रो० निलय कुमार**, पूर्व प्राचार्य एवं उप-प्रबंधक, जगतपुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी, का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आपके प्रशासनिक और शैक्षणिक अनुभव ने मुझे न केवल विषय की गहराई को समझने की दृष्टि प्रदान की, बल्कि आपके निरंतर प्रोत्साहन ने ही इस पुस्तक के लेखन का मार्ग प्रशस्त किया।

मैं **डॉ. कमलाकांत तिवारी**, पूर्व क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी, वाराणसी मंडल, का विशेष रूप से ऋणी हूँ। मामा के रूप में, आपके स्नेहिल मार्गदर्शन और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आपके व्यापक ज्ञान ने मुझे विषय-वस्तु को अधिक प्रासंगिक और व्यावहारिक बनाने में सहायता की। आपका आशीर्वाद सदैव मेरे साथ रहा है।

मेरा विशेष आभार **डॉ. नंदलाल शर्मा**, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, जगतपुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी के प्रति है। **आपकी प्रेरणा ही इस रचना को एक व्यवस्थित पुस्तक का रूप देने का मुख्य आधार बनी।** आपके मार्गदर्शन और अटूट विश्वास ने ही मुझे इस शैक्षणिक कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरित किया।

मैं अपने **शोध निर्देशक डॉ. अभिषेक मिश्रा**, असिस्टेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,

प्रयागराज, का विशेष धन्यवाद करता हूँ। शोध के दौरान आपके अकादमिक मार्गदर्शन, विश्लेषणात्मक सुझावों और बहुमूल्य समय ने मेरी लेखन शैली को वैज्ञानिक और तार्किक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

यह कृतज्ञता लेखन मेरे परिवार के स्तंभों—मेरे पूज्य **पिता श्री सभाशंकर मिश्रा** और मेरी आदरणीय **माता श्रीमती शकुंतला मिश्रा**—के बिना अधूरा है। आपके अथाह त्याग, अटूट विश्वास और प्रेरणा ने मुझे शैक्षणिक कार्यों के प्रति समर्पित रहने की शक्ति दी। आपका निस्वार्थ समर्थन मेरे जीवन की सबसे बड़ी पूंजी है।

अंत में, मैं अपनी **धर्मपत्नी श्रीमती रूपम शुक्ला**, सहायक अध्यापिका (अंग्रेजी), श्री शंकराश्रम महाविद्यापीठ इंटर कॉलेज, का हृदय से धन्यवाद करता हूँ। विपरीत परिस्थितियों में आपका भावनात्मक संबल, धैर्य और सहयोग ही इस कार्य को पूरा करने का मुख्य आधार रहा। आपके साथ के बिना यह पुस्तक लेखन संभव नहीं था।

मैं उन सभी मित्रों, सहकर्मियों और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े पाठकों का भी आभारी हूँ जिनके विचारों ने इस कृति को समृद्ध किया।

**सादर**

**डॉ. पवन मिश्रा**

# विषय वस्तु


## अध्याय 1 - व्यावसायिक हिंदी लेखन: अवधारणा, महत्व और उपयोगिता ........................1

*1.1.* व्यावसायिक हिंदी लेखन: एक परिचय ................................................ *1*
*1.2.* व्यावसायिक लेखन की सामान्य अवधारणा ............................................ *1*
*1.3.* हिंदी भाषा में व्यावसायिक लेखन का उदय और विकास................................ *2*
*1.4.* व्यावसायिक हिंदी लेखन क्या है? *(What is Commercial Hindi Writing?)*........................................................... *3*
*1.5.* विशेषताएँ: उद्देश्य-केंद्रित, स्पष्टता, संक्षिप्तता, औपचारिकता, सटीकता.................. *4*
*1.6.* व्यावसायिक हिंदी लेखन का महत्व *(Importance of Commercial Hindi Writing)* ........................................................ *5*
*1.7.* व्यावसायिक हिंदी लेखन का उपयोग और अनुप्रयोग *(Uses and Application)* .................................................... *7*
*1.8.* छात्रों के कौशल विकास में इसकी उपयोगिता *(Utility in Students' Skill Development)* ...............................................*10*
*1.9.* सारांश एवं आगामी सोपान ...................................................*11*

## अध्याय 2 - संचार: अवधारणा और प्रक्रिया.........13

*2.1.* संचार: परिभाषा ...........................................................*13*
*2.2.* संचार: व्याप्ति *(Scope)*..................................................*16*
*2.3.* संचार प्रक्रिया के घटक ..................................................*18*
*2.4* संचार प्रक्रिया मॉडल *(Communication Process Models)*..................*36*

## अध्याय 3 - संचार के प्रकार और उद्देश्य................46

*3.1.* संचार के प्रकार: शैली के आधार पर...............................................*46*
*3.2.* पहुँच के आधार पर संचार के प्रकार *(Types of Communication Based on Reach)*..................................................*61*

# अध्याय 4 - जनसंचार: उद्देश्य और महत्व ............76

*4.1.* सूचना देना *(To Inform)*..........................................................78

*4.2.* शिक्षित करना *(To Educate)* ....................................................80

*4.3.* मनोरंजन करना *(To Entertain)* ................................................83

*4.4.* एजेंडा तय करना *(To Set Agenda)*...........................................85

*4.5.* निगरानी करना *(To Surveil)* और प्रहरी की भूमिका *(Watchdog Role)* ........87

*4.6.* विचार-विमर्श मंच *(Forum for Discussion)*..................................89

# अध्याय 5 - जनसंचार के माध्यम और विधाएँ.......95

*5.1.* समाचार *(News)* ..............................................................97

*5.2.* पत्रकारिता *(Journalism)*......................................................*100*

*5.3.* जनसंचार के प्रमुख माध्यम......................................................*108*

# संदर्भ सूची ..................................................133